हरियाणा गाय नस्ल सुधार कार्यक्रम

राष्ट्रीय डेयरी योजना

हरियाणा पशुधन विकास बोर्ड
सैक्टर–2, पंचकूला।

हरियाणा प्रदेश अपने पशुधन के लिये विश्वविख्यात है। प्रदेश का दुग्ध उत्पादन 74.42 लाख टन प्रति वर्ष एवं प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 773 ग्राम है। राज्य की हरियाणा नस्ल की गाय दूध तथा भारवाही दोनो कार्यों के लिए जानी जाती है। इस नस्ल की गायों को दुग्ध उत्पादन तथा बैलों को कृषि कार्य के लिये उपयोग में लाया जाता है। पिछले कुछ समय से कृषि कार्य में निरंतर मशीनीकरण के चलते हरियाणा नस्ल के बैंलो की मांग कम होने के कारण, गायों के पालन का व्यवसाय उस गति से नही बढ़ पाया जिस गति से बढ़ना चाहिए था। देशी नस्ल की गाय हरियाणा एवं उसके उत्पाद जैसे दूध, घी, गोबर, गौ मूत्र, इत्यादि का महत्व प्राचीन समय से ही विख्यात है।

<u>हरियाणा गाय पालने का महत्वः–</u>

1. गाय के दूध में वसा की मात्रा कम होती है जिसके कारण बच्चों एवं बूढों के लिए सुपाच्य होता है।
2. गाय का दूध विटामिन डी, पोटाशियम एवं कैलशियम का अच्छा स्त्रोत है जोकि हड्डियों की मजबूती के लिये जरूरी है। इसके साथ ही गाय के दूध में कैरोटिन भी प्रचूर मात्रा में पाया जाता है। यह

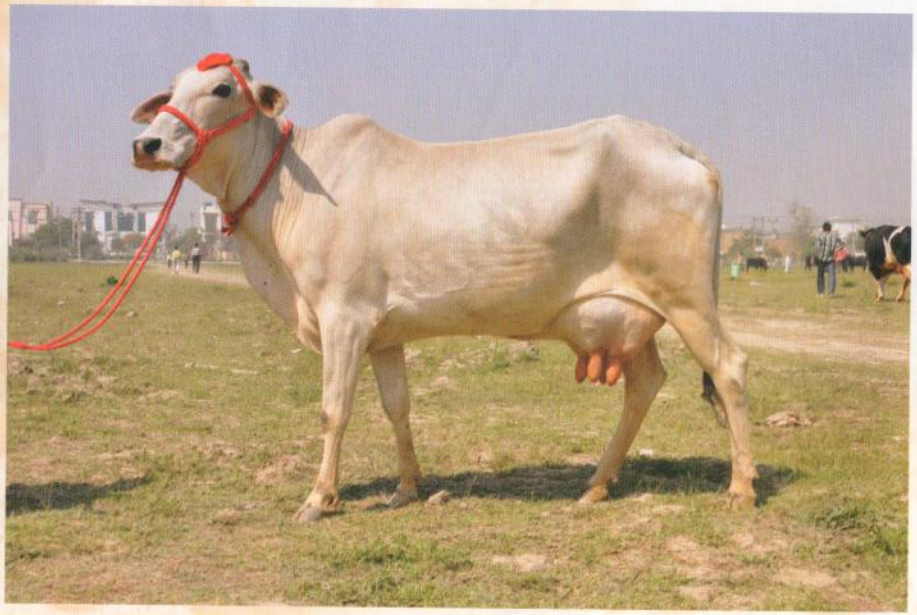

कैरोटिन मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता को 115 प्रतिशत तक बढ़ाता है।

3. गाय के दूध में विटामिन ए पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है जो आंखों में होने वाले रतोन्धी रोग की रोकथाम के लिये आवश्यक है। इसके साथ विटामिन बी 12 व राइबोफलेबिन भी प्रचूर मात्रा में पाया जाता है जो हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।
4. गाय का दूध ब्रैस्ट कैंसर से बचाव करता है और बल्ड–कलोंटिग, मासपेशियों के संकूडन, रक्तचाप नियन्त्रण तथा सेलमेमबरैन के कार्यों को सूचारू रूप से चलाने में भी सहायक होता है।
5. गाय के दूध से बनाई गई दही के बेक्टीरिया ऐसे पदार्थ की संरचना करते है जो लीवर में कोलेस्ट्रोल बनने को रोकता है। यह दही रक्तचाप को नियन्त्रित करने में भी उपयोगी होती है।
6. गाय का दूध, देशी घी को श्रेष्ठ स्त्रोत माना गया है।
7. गौ मूत्र, गैस, कब्ज, दमा, मोटापा, रक्तचाप, जोड़ो का दर्द, मधुमेह, कैंसर आदि अनेक बीमारियों की रोकथाम के लिये बहुत उपयोगी होता है।
8. देशी गाय के गोबर में लगभग तीन करोड़, क्रोस ब्रीड गाय के गोबर में 78 लाख तथा भैंसों के गोबर में कुछ लाख जीवाणु होते हैं जो भूमि की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वैज्ञानिक तौर पर देखा जाये तो एक गाय के गोबर व मूत्र से बनाई गई खाद से 25 एकड़ तक भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है इसमें नाईट्रोजन, कार्बनः फास्फोरस, विटामिन, खनिज लवण, औरगेनिक पदार्थ प्रचूर मात्रा में पाये जाते है।
9. विदेशी नस्ल की गायों का दूध **A-1** के रूप में जाना जाता है और इसमें कैसोमोर्फिन नामक रसायन पाया जाता है जो विषैला होता है। अतः इन गायों का कच्चा दूध प्रयोग में नही लाया जाता जबकि देशी गाय का दूध **A-2** के रूप में जाना जाता हैं और इसमें इम्यूनो एसिड़ प्रोलिन पाई जाती है जो इन्सूयूलिन प्रोटिन के साथ जुड़ कर **A-2** दूध का निर्माण करती है। इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है जो विभिन्न

प्रकार की बीमारियों की रोकथाम के लिये लाभदायक है।

हरियाणा नस्ल सुधार कार्यक्रम/योजनाः

हरियाणा नस्ल की गायों की उपयोगिता व उसके महत्व को देखते हुये राज्य सरकार ने एक अनूठी योजना चलाई है। योजना के अन्तर्गत, यदि कोई पशुपालक हरियाणा नस्ल की गाय पालता है और गाय का दुग्ध उत्पादन 1600 से 2000 लीटर प्रति ब्यांत हैं तो ऐसी गाय के पालक को 5000/– रूपये की प्रोत्साहन राशि तथा जिन पशुपालकों की गायों का दुग्ध उत्पादन 2000 लीटर प्रति ब्यांत से ज्यादा है, ऐसे गाय पालकों को 10000/– रूपये की प्रोत्साहन राशि हरियाणा पशुधन विकास बोर्ड द्वारा दी जाती हैं। केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत 1000 रू0 की राशि अलग से सहायता के रूप में दी जायेगी।

पशुपालक इस योजना का लाभ कैसे लें :–

सरकार द्वारा चलाई जा रही इस योजना का लाभ लेने के लिये पशुपालक अपनी हरियाणा नस्ल की गायों का पंजीकरण आधिकारिक पशुचिकित्सक के पास करवायें और दूध की उत्पादकता रिकोर्ड करवायें। पंजीकरण के लिये किसी भी प्रकार की कोई राशि देय नहीं है। दुग्ध मापन की पहली रिकार्डिंग गाय ब्याने के 5 से 25 दिनों के बीच करवाना अनिवार्य है तथा तदोपरान्त प्रति माह भी दुग्ध मापन करवायें। विभागीय कर्मचारी दुग्ध मापन का कार्य किसान के घर द्वार पर करेगा ओर रिकोर्ड रखेगा।

हरियाणा नस्ल के उतम सांडो की पहचान

राष्ट्रीय डेरी योजना के तहत उच्च कोटि के हरियाणा नस्ल के सांड़ो की पहचान के लिये राज्य के तीन जिलों भिवानी, रोहतक व झज्जर के 80 गांवों में यह प्रोग्राम चलाया जा रहा है। इस प्रोग्राम के तहत, इन जिलों में 40 कृत्रिम गृर्भाधान कार्यकर्ताओं का चयन किया गया है जो कि पशुपालकों के घर द्वार पर कृत्रिम गृर्भाधान विधि द्वारा हरियाणा नस्ल सुधार की गतिविधिओं को कार्यन्वित कर रहे है। कृत्रिम गृर्भाधान से जन्में उच्च कोटि की गायों के बछड़ों को सरकार नस्ल सुधार के लिए 10,000 रूपयें की राशि तक खरीद करेगी। ऐसे बछड़ो को वैज्ञानिक ढंग से पाला जायेगा और साण्ड बनने पर हरियाणा

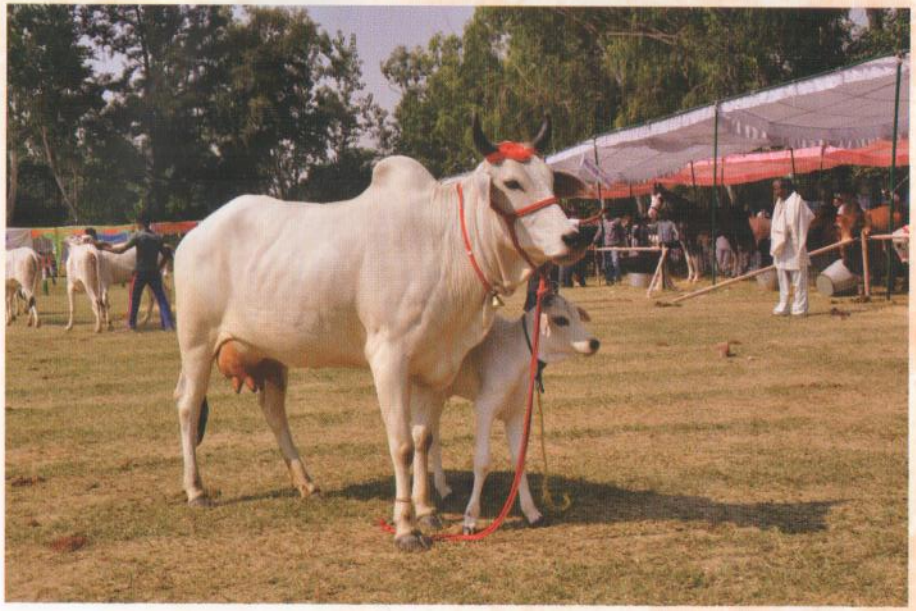

राज्य में ही नही अपितु अन्य राज्यों को भी नस्ल सुधार के लिए दिये जायेंगे।

राष्ट्रीय डेयरी योजना की विशेषताएंः–

पशुपालन भाईयों के लिए महत्वपूर्ण संदेश

क्या आप जानते हैं ?

राष्ट्रीय डेयरी योजना के अन्तर्गत, आपके क्षेत्र में गाय/भैंसों में घर पहुँच कृत्रिम गर्भाधन सेवा अब केवल एक फोन कॉल पर उपलब्ध है। इस योजना के अन्तर्गतः

- मनक संचालन प्रक्रिया का अनुकरण करने हुए प्रशिक्षित एवं अनुभवी तकनीशियन द्वारा विश्वसनीय तथा विश्वस्तरीय कृत्रिम गर्भाधान सेवा उपलब्ध कराई जाती है।
- भारत सरकार द्वारा गठित केंद्रीय निगरानी इकाई सये प्रमाधित (ए) या (बी) श्रेणी के वीर्य उत्पादन केंद्र में उत्पादित उच्च गुणवता के वीर्य का उपयोग किया जाता है।

- पशुओं की उत्पादकता वृद्वि हेतू अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमाधित संतति परीक्षण (प्रोजेनी टेस्टिंग) तथा वंशावली चयन, (पेडिग्री सिलक्शन) कार्यक्रमों के क्रियान्वयन द्वारा उच्च अनुवंशिक योग्यता के सांडों का उत्पादन, क्षेत्रिय स्तर पर, पशुपालकों की भागीदारी से करने की योजना है। जिससे पशुओं के निंरतर विकास में मदद होगी तथा कृत्रिम गर्भाधान हेतू उच्च गुणवत्ता के वीर्य के मांग की पूर्ति होगी।

एक जागरूक तथा प्रगतिशील पशुपालक होने के नाते आपको इन कार्यक्रमों की जानकारी आवश्यक है।

1. संतति परीक्षण कार्यक्रम में प्रजनन हेतु प्रयुक्त किऐ गए सांडों का मूल्यांकन उनसे उत्पन्न संतति के दुग्ध उत्पादन के आधार पर किया जाता है । मूल्यांकन के आधार पर सांड उत्पन्न करने के लिए किया जाता है जिससे आने वाली पीढिंयों में बेहतर दुग्ध उत्पादन क्षमता सुनिश्चित की जा सकती है।

- वंशावली चयन कार्यक्रम में देशी नस्लों राठी, साहिवाल, थारपारकर, हरीयाना, गीर, मांक्रज, पंढरपूरी, जाफराबादी, नीली रावी, बन्नी इत्यदि

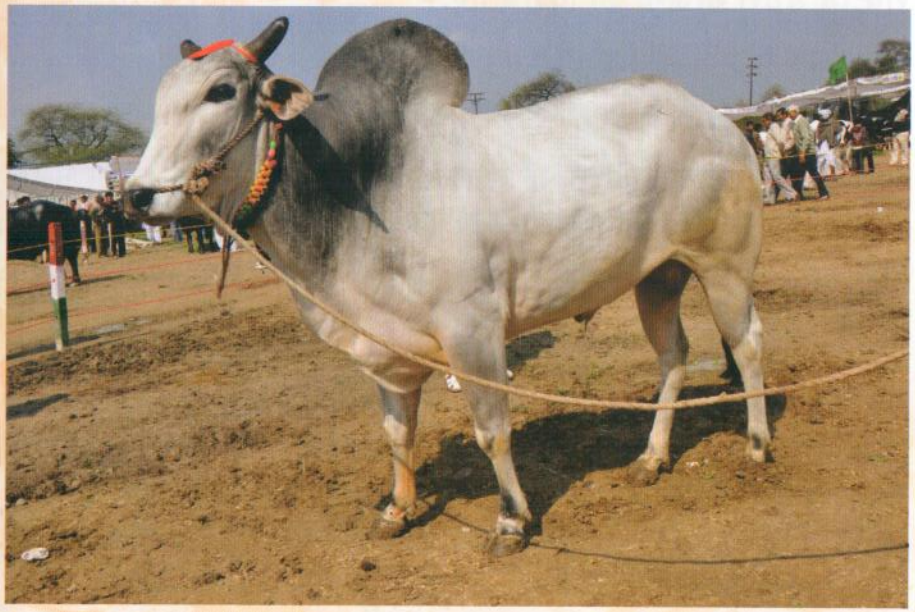

के संरक्षण तथा विकास के उद्वेश्य से इन नस्लों में कृत्रिम गर्भाधन को बढावा देकर तथा दूध उत्पादन अभिलेखन (रिकॉर्डिंग) द्वारा उच्च उत्पादकता वाले पशुओं का चयन अगली पीढ़ी के सांड़ो के उत्पादन के लिए किया जाता है।

अतः सर्वोत्तम सांड़ के अचूक तथा विश्वसनीय चुनाव हेतू आपका निम्नांकित सहयोग अपेक्षित है।

1. कृत्रिम गर्भाधान करते वक्त आपके पशु की पहचान हेतु कान में लगाया जाने वाला 12 अंको का विशिष्ट बिल्ला (टैग) लगवाने में सहयोग करें। टैग के नंबर से सही जानकारी रखने में मदद होती है। अगर किसी कारणवंश टैग निकल जाता हे। या गिर जाता है तो अपने कृत्रिम गर्भाधानकर्ता को कहकर नया टैग लगवा लें। इससे आनुवांशिक विकास को रिमाधित करने हेतू स्टीक आरे विश्वसनीय आंकड़ों का संग्रह करने मे मदद मिलती है।

2. इस कार्यक्रम में उत्पन्न होने वाली मादा पशुओं का तथा क्षेत्र में उपलब्ध अधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता वाले पशुओं के दूध उत्पादन का

अभिलेखन (रिकॉर्डिंग) भी किया जाता है। अगर आपके पास अधिक दूध उत्पादन करने वाले पशु है तो उसे निकट के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर पंजीकृत कराये।

3. पशु के दूध की पहली रिकॉर्डिंग ब्याने के 5–25 दिना के अंदर कि जाती है तथा उसके बाद लगभग एक माह के अंतराल से पूरे ब्यांत में 10 से 11 बार होती है। दूध रिकॉर्डिंग आपके घर पूर्व निधार्रित तिथि को सुबह तथा शाम दोनों वक्त का दुध नापने आते है।

4. दूध रिकॉर्डिंग के दिन बछड़े को पशु के थन से लगाकर दूध न पिलाएं इससे गलत रिकॉर्डिंग होगी। अगर जरूरी हो तो पवासने के लिए धन से लगाने के बाद अलग कर दें। रिकॉर्डिंग के बाद बछड़े को अलग से दूध पिला दें।

5. दूध रिकॉर्डिंग के निर्धारित दिन अगर आपका पशु अस्वस्थ है तो दूध

रिकॉर्डर को इसकी सूचना दें, जिससे दूध रिकॉर्डिंग पशु के स्वस्थ्य होने पर 2–4 दिन बाद की जा सके।

6. सही तरीके से दूध की रिकॉर्डिंग करने से प्रजनन के लिए प्रयुक्त किए गए सांढ का अचूक मूल्यांकन करने में मदद होती है अतः दूध रिकॉर्डर को अपने पशु की सही तरीके से रिकॉर्डिंग करने में सहयोग करें।

7. वैज्ञानिक तरीके से सम्पूर्ण ब्यात के दूध उत्पादन की रिकॉर्डिंग करने से पशु का अधिक मूल्य प्राप्त हो सकता है।

8. दूध रिकॉर्डिंग के दिन फैट, प्रोटीन तथा लैक्टोज की जांच के लिए दूध रिकॉर्डर द्वारा दूध का नमूना (सैम्पल) लिया जाता है।

9. प्रत्येक रिकॉर्डिंग के पशू का दूध रिकॉर्डिंग कार्ड बनाया जाता है जिसमें दूध रिकॉर्डर सुबह–शाम का दूध उत्पादन अंकित करता है। कार्ड को संभाल कर रखें।

10. यथासंभव, पूरे ब्यांत की रिकॉर्डिंग होने तक रिकॉर्डिंग में लिए गए पशु को न बेचें।

11. दूध की रिकॉर्डिंग कार्यक्रम में सम्मिलित किए गए पशुओं में से न्यूनतम मानक उत्पादन संपदित करने वाले पशुओं का प्रजनन विशेष प्रमाणित सांड के सीमेन से बिना किसी अतिरिक्त मूल्य में किया जाता है। तथा पूरे ब्यांत के रिकॉर्डिंग के पश्चात पशुपालक को प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिया जाता है।

12. विशेष प्रमाणित सांड के सीमेन से पैदा हुई मादा, निसद्रेह, भविष्य में एक उत्कृष्ट दुधारू गाय/भैंस बनेगी, जिसके आप भाग्याशाली मालिक होंगे।

13. अगर विशेष प्रमाणित सांड के सीमेन से किए गए कृत्रिम गर्भाधान सें नर पैदा होता है तो उसकी डीएनए जांच तथा रोगमुक्त होने की जांच के पश्चात प्राजैक्ट द्वारा निर्धारित मूल्य तालिका के आधार पर खरीद लिया जाता है।

14. कार्यक्रम के कारगर क्रियान्वयन के उद्देश्य से सुपरवाइजर तथा अन्य अफसरों द्वारा कार्यों का औचक निरीक्षण एवं सत्यापन किया जाता है । अतः सत्यापन हेतु आए पर्यवेक्षकों व अफसरों का सहयोग करें। इससे आपको बेहतर सेवा उपलब्ध कराने में सुविधा होगी।

15. कार्यों के सत्यता की पुष्टी करने के उद्देश्य से खून के नमूने डीएनए परीक्षण लिए जाते है। अतः पशु के खून के नमूने देने में आनाकानी न करें तथा सहयोग करें।

अधिक जानकारी हेतू निकट के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर संपर्क करें।

राष्ट्रीय डेयरी योजना के मिशन मिल्क की परिकल्कना एक और दुग्ध क्रांति की दिशा में एक कदम है। आइए हम सभी मिल कर इसे सफल बनाए।

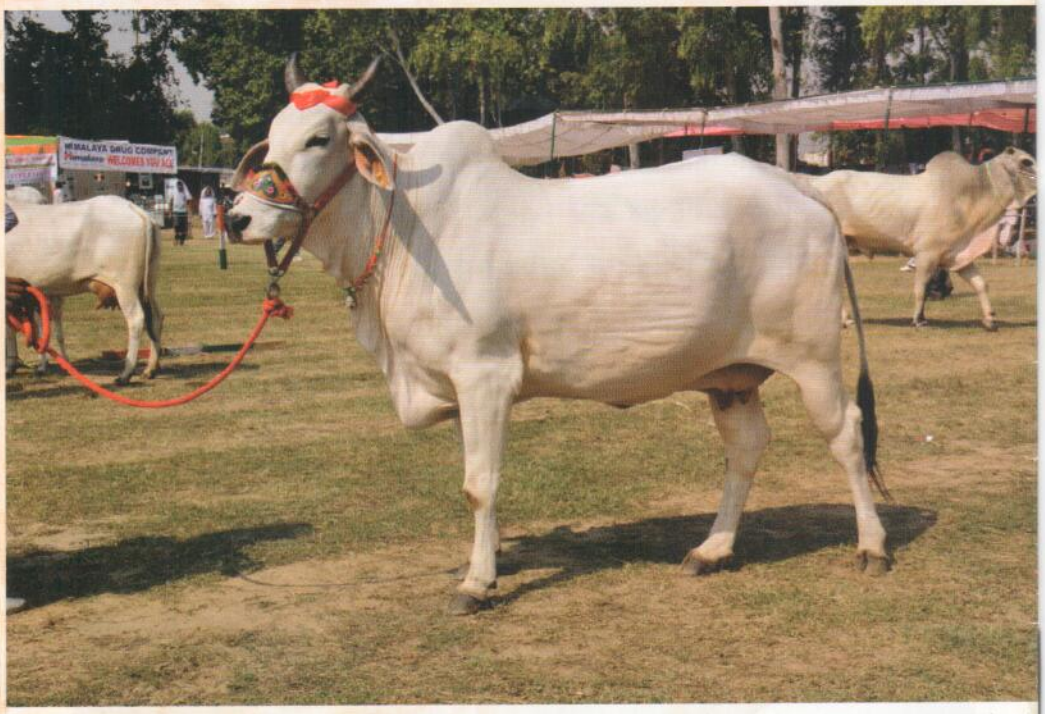

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक - डा0 विरेन्द्र सिंह,
प्रबंधक निदेशक (एच.एल.डी.बी)

सम्पादक - डा0 ओ.पी. राव,
परियोजना संयोजक (एच.बी.पी.एस)

सह–सम्पादक - डा0 मनीषा चौहान, पशु चिकित्सक